नवभारत टाइम्स
शुक्रवार, 15 अगस्त 2025

टीचर बोले, किताब से जवाब दे सकेंगे लेकिन पढ़ाई जरूरी है!

CBSE स्कूल के अगले सेशन यानी 2026-27 से नौवीं क्लास के बच्चों के लिए ओपन बुक एग्जाम करवाने जा रही है। इस खबर से छात्र खुश हैं कि अब छोटी-छोटी चीजें भूलने पर उनके मार्क्स नहीं कटेंगे। वहीं टीचर्स का कहना है कि कुछ मामलों में यह बच्चों का तनाव बढ़ा भी सकती है। इसके तमाम पहलुओं पर हमने एक्सपर्ट्स से बात की :

Shubham.Tripathi@timesofindia.com

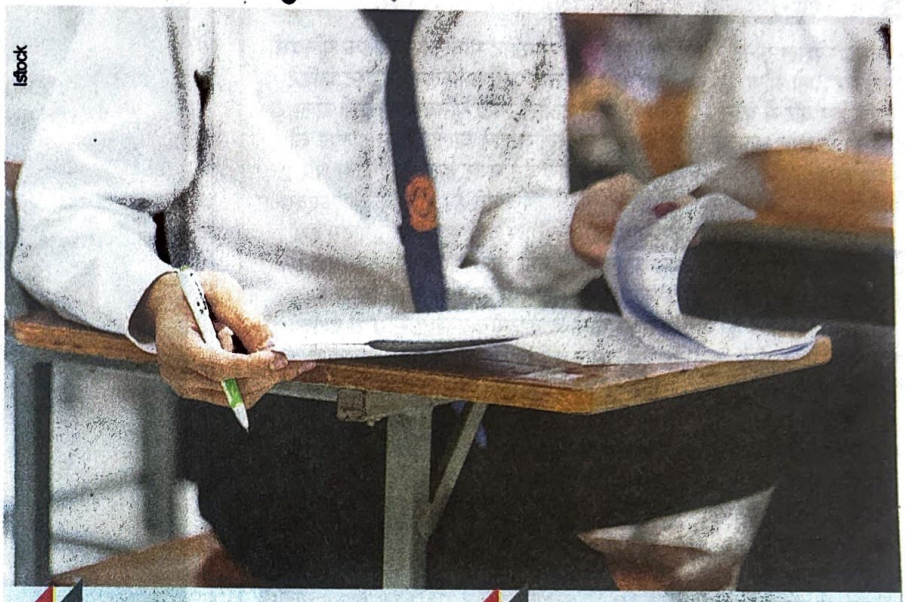

ओपन बुक्स एग्जाम यानी ऐसी परीक्षा जिसमें छात्र परीक्षा हॉल में किताबें और नोटबुक्स ले जा सकेंगे और परीक्षा के दौरान उन किताबों-नोटबुक्स से उत्तर देख भी सकेंगे। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) अगले साल से नौवीं क्लास के लिए कुछ विषयों में इस तरह की परीक्षा आयोजित करने जा रहा है। खबरों के मुताबिक पायलट स्टडी के आधार पर पढ़ाई के दबाव और उनके तनाव को कम करने के लिए यह फैसला लिया गया है।

पहले से हो रहा है ओपन बुक टेस्ट

ओपन बुक एग्जाम की सूचना के बाद जहां आठवीं क्लास के वे छात्र खुश हैं जो अगली साल नौवीं क्लास में जाएंगे। वहीं पैरंट्स की मिली-जुली प्रक्रिया सामने आ रही है। हालांकि दिल्ली के कुछ स्कूल अभी भी ओपन बुक टेस्ट लेते हैं। एक प्राइवेट स्कूल की आठवीं क्लास में पढ़ने वाली गीतू बताती हैं, 'हमारे स्कूल में ओपन बुक टेस्ट होता है, तो हमारे लिए यह कुछ नया नहीं होगा। लेकिन हमारे स्कूल में होने वाला टेस्ट सिर्फ निबंध या लेटर लिखने तक होता है। टीचर कहते हैं कि अगर आपको लेटर लिखने का फॉर्मेट नहीं पता है, तो किताब से देख सकते हो और बहुत सारे बच्चे किताब का सहारा लेते भी हैं। अब अगर हमारा ओपन बुक एग्जाम होता है तो अच्छा है क्योंकि फिर हर चीज याद करने का प्रेशर खत्म हो जाएगा।' वहीं उनके पिता सिद्धार्थ कहते हैं कि बच्चों पर से प्रेशर कम करने के लिए अच्छा कदम है, लेकिन एग्जाम का फॉर्मेट ऐसा भी ना रखा जाए कि पढ़ने वाले और ना पढ़ने वाले, दोनों बच्चों की परफॉर्मेंस एक जैसी हो जाए।'

ओपन बुक एग्जाम के बावजूद छात्रों को पढ़ना तो होगा ही। वरना उन्हें पता ही नहीं लगेगा कि सवाल कहां से पूछा गया है।

- रूमा पाठक, स्कूल प्रिंसिपल

इस तरह के एग्जाम में अगर एप्लिकेशन बेस्ड सवाल आते हैं और बच्चे ने कुछ पढ़ा नहीं है तो उसका तनाव बढ़ भी सकता है।

- ज्योति अरोड़ा, स्कूल प्रिंसिपल

इस एग्जाम के लिए टीचर्स और छात्रों की ट्रेनिंग बहुत अहम होगी क्योंकि सभी बच्चों का दिमाग अलग है और बिना प्रैक्टिस के लिए यह एग्जाम देना मुश्किल हो सकता है।

- जया जोशी, शिक्षाविद

'पढ़ने वाले छात्रों के लिए अच्छा, वरना बढ़ सकता है प्रेशर'

शिक्षकों का कहना है कि चूंकि इसमें सवाल सीधे-सीधे नहीं पूछे जाते बल्कि ऐसे पूछे जाते हैं, जो तथ्यों को याद करने बजाय समझाने और प्रॉब्लम सॉल्व करने पर बेस्ड होते हैं। ऐसे में किताबें और नोटबुक से देखने के बावजूद वही बच्चा बेहतर परफॉर्म करेगा जिसने टॉपिक को अच्छे से पढ़ा और समझा होगा। एम. एम. पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल रूमा पाठक कहती हैं, 'ओपन बुक एग्जाम के बावजूद बच्चों को पढ़ना तो होगा ही। ऐसा नहीं होगा कि आपने कुछ पढ़ा नहीं है और एग्जाम हॉल में किताब से देखकर पूरा उत्तर लिख दिया। अगर आपने कुछ पढ़ा नहीं होगा तो आप एग्जाम हॉल में उत्तर ढूंढते ही रह जाओगे।' वहीं माउंट आबू पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल ज्योति अरोड़ा कहती हैं कि अभी इसे लेकर कोई गाइडलाइंस नहीं आई हैं। जब गाइडलाइंस आएंगी तब पता लगेगा कि यह एग्जाम किस तरह से होगा। मगर ओपन बुक का मतलब यह नहीं है कि पढ़ना ही नहीं पड़ेगा। अगर एप्लिकेशन बेस्ड सवाल आते हैं तो दिमाग तो लगाना ही पड़ेगा। अगर आपने नहीं पढ़ा है, तो यह तनाव बढ़ाने वाला हो सकता है।'

'टीचर्स और छात्रों की ट्रेनिंग होगी बहुत जरूरी'

शिक्षाविदों का मानना है कि ओपन बुक एग्जाम की नीति को ठीक से लागू करने के लिए शिक्षकों और बच्चों की ट्रेनिंग बहुत जरूरी है। शिक्षाविद जया जोशी कहती हैं, 'ओपन बुक एग्जाम में अगर एप्लिकेशन बेस्ड सवाल आते हैं या ऐसे जिनका विश्लेषण करना होगा, तो हमें यह समझना भी जरूरी है कि नौवीं क्लास के बच्चों का दिमाग इतना तेज नहीं होता कि वे एकदम से विश्लेषण करके उत्तर बना लेंगे। फिर एक ही क्लास की, एक ही सब्जेक्ट की बहुत सारी रेफरेंस बुक्स बाजार में मिलती है और बच्चे अलग-अलग किताबों से पढ़ते हैं। तो यह देखना होगा कि उस सवाल का किस तरह का उत्तर CBSE चाहता है, क्योंकि हर बच्चे का विश्लेषण अलग होगा। हर बच्चे का स्तर अलग होता है और उसकी रेफरेंस बुक्स भी अलग हो सकती हैं। चेक करने वाले शिक्षक भी अलग होंगे। इसके लिए एग्जाम से पहले बच्चों की ट्रेनिंग जरूरी होगी ताकि वह एग्जाम में सवाल को समझकर उसी हिसाब से उत्तर लिखे और ज्यादा मार्क्स ला सके। बच्चों की ट्रेनिंग के लिए उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों की ट्रेनिंग भी बहुत जरूरी होगी।'